प्रथम संस्करण

2020-21

महिला प्रकोष्ठ

राजकीय महाविद्यालय,नलवा

डॉ० वंदना शर्मा
संपादिका

श्रीमती सुनीता संदीप
प्राचार्या

Women Cell

DR. KAVITA KHARINTA(CONVENER)
MRS. SAROJ BALA
DR. SEEMA
DR. GEETA DEVI

प्राचार्या सन्देश

राजकीय महाविद्यालय- नलवा (हिसार) के महिला प्रकोष्ठ की ई-मैग्जीन 'पंख' का पहला संस्करण 2020-21 को महाविद्यालय के विद्यार्थियों तथा स्टाफ सदस्यों को समर्पित करते हुए विशेष हर्ष का अनुभव हो रहा है| प्रत्येक विकसित समाज के निर्माण में स्त्री एवं पुरुष दोनों की सहभागिता आवश्यक है लेकिन महिलाओं का सशक्तिकरण आधुनिक समाज की महत्वपूर्ण आवश्यकता है| हमारा संविधान भी महिलाओं की समानता की गारंटी देता है| महिला सशक्तिकरण का उद्देश्य उनमें आत्मविश्वास का संचार कर उन्हें प्रगति की ओर अग्रसर होने के लिए प्रेरित करना है| राजकीय महाविद्यालय- नलवा का 'महिला प्रकोष्ठ' अपनी जिम्मेदारी का ई- पत्रिका के माध्यम से पूर्ण रूप से निर्वहन कर रहा है |कोविड-19 की वैश्विक महामारी के परिप्रेक्ष्य में ई-मैगजीन 'पंख'छात्राओं को उनकी प्रतिभा को निखारने के साथ-साथ उनकी समस्याओं से संबंधित विमर्श को भी समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का एक सशक्त माध्यम सिद्ध होगा ,मैं इसी उम्मीद के साथ महाविद्यालय के महिला प्रकोष्ठ को बधाई देती हूं तथा आशा करती हूं कि इस ई-मैग्जीन के द्वारा 'सशक्त महिला सशक्त समाज' के नारे को यथार्थ में परिवर्तित करने में प्रयासरत रहेगा।

धन्यवाद|

श्रीमती सुनीता संदीप
संरक्षक व प्राचार्या

डॉ० कविता खरींटा

संयोजिका

महिला प्रकोष्ठ

राजकीय महाविद्यालय,नलवा

महिला प्रकोष्ठ की कन्वीनर होने के नाते मेरे लिए बहुत ही हर्ष व गर्व का अवसर है कि जीवन में हर तरह के पंख देने के प्रण के साथ ई -मैग्जीन का पहला संस्करण अपने कॉलेज के सहयोगी सदस्यों, विद्यार्थियों व समाज की हर महिला को समर्पित है! महिलाओं को सशक्त करने का सपना हरियाणा सरकार के साथ-साथ , हमारी प्राचार्या श्रीमती सुनीता संदीप व राजकीय कॉलेज नलवा का महिला प्रकोष्ठ एक प्रमुख मिशन है! इस ई- मैग्जीन को दुनिया की हर महिलाओं को समर्पित करते हुए मैं कहना चाहूंगी हे नारी !आप भगवान का दिया अनमोल,

उपहार हो! ईश्वर ने सब गुणों का

समावेश कर नारी को धरती पर उतारा। इस दुनिया ने हे नारी! तुम से ही त्याग, तपस्या, ममता का अर्थ सिखा है। हे नारी तुम शक्ति हो! तुम सामर्थ्य हो!तुम ही तो देवरूपिणी हो! तुम ही उजाले का संसार हो!तुम साक्षात जगत जननी हो !ममता की मूरत हो! कभी ना हार मानने वाली शक्ति हो! फिर क्यों थकी हो, क्यों रुकी हो! फेलाओ अपने पंख !!!!सारा जहां, सारा आसमां तुम्हारा है!!

संपादिका
डॉ वंदना शर्मा
सहायक प्रोफेसर हिंदी
राजकीय महाविद्यालय नलवा

जहां एक ओर पत्रकारिता स्वयं ही महिलाओं के लिए एक चुनौतीपूर्ण क्षेत्र रहा है वहीं दूसरी ओर महिलाओं की आवाज लोगों तक पहुंचाने का एकमात्र माध्यम भी यही है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तब तक अधूरी है जब तक गरीबों पिछड़ों और महिलाओं की जरूरतों को आवाज न मिलें। इसमें कोई संदेह नहीं है कि महिलाओं ने पिछले दो दशकों में काफी प्रगति की है वह अब शिक्षण, फैशन, लाइफ स्टाइल और सौंदर्य और मौसम के अलावा खेल, रक्षा ,वित्त, राजनीति जैसे मुद्दों पर बेबाकी से अपने विचार रख कर अपनी प्रतिभा का निर्वहन कर रही हैं|प्राचार्या महोदया के निर्देशन में महिला सशक्तिकरण के विकास के मुद्दे को ध्यान में रखकर महाविद्यालय में महिला प्रकोष्ठ के द्वारा ई-पत्रिका " पंख" की संपादिका का कार्य मुझे दिया गया है इसके लिए प्राचार्य महोदया का धन्यवाद करती हूं साथ ही विश्वास दिलाते हुए आप सभी के सहयोग से महिला सशक्तिकरण में संवृद्धि ध्यान में रखते हुए ई पत्रिका के माध्यम से सकारात्मक विषयों का चयन करके नारी व्यक्तित्व के पहलू को सवारने का प्रयास करुंगी।✍

DR.VIDUSHI SHARMA
अकादमिक काउंसलर, IGNOU
OSD , (Officer on Special Duty)NIOS
(National Institute of Open Schooling)
विशेषज्ञ, केंद्रीय हिंदी निदेशालय, उच्चतर शिक्षा विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार,दिल्ली।

शुभकामना संदेश.....

सहित्योन्नयन अपने आप मे एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है और यदि यही प्रक्रिया विद्यार्थी जीवन में आरंभ की जाती है तो वह भविष्य के लिए बहुत सी संभावनाएं प्रस्तुत कर सकती हैं ।इन्हीं भावनाओं के साथ राजकीय महाविद्यालय नलवा ,हिसार के महिला प्रकोष्ठ द्वारा ई- पत्रिका "पंख" जो कि सम्पादिका डॉ० वंदना शर्मा के सहयोग एवं प्रिंसिपल श्रीमती सुनीता संदीप जी के नेतृत्व में आरंभ होने जा रही है , अपने आप में बहुत ही महत्वपूर्ण विचार एवं प्रयास है।

"पंख" अपने आप में ही बहुत महत्वपूर्ण सार्थक नाम है जो इन सभी विद्यार्थियों को साहित्याकाश में ऊंची परवाज़ के लिए मानोभिलाषित आलम्बन रूपी "पंख" प्रदान कर रही है।

इस सुंदर सोच और सार्थक प्रयासों के लिए मैं पूरी टीम का हार्दिक अभिनंदन करती हूं एवं उन्हें हृदय से शुभकामनाएं प्रदान करती हूं ।

आपका प्रयास स्तुत्य एवम प्रणम्य है।

इस सफलता के लिए आपका शतश: अभिनन्दन!

भविष्य की अनंत शुभकामनाओं के साथ....

M 9811702001

drvidushisharm9300@gmail.com

DEEPAK THAKUR

Indian Hockey Player

Olympian Arjuna Awardee

महिला सशक्तिकरण को बेहद आसान शब्दों में परिभाषित किया जा सकता है कि इससे महिलाएँ शक्तिशाली बनती है जिससे वो अपने जीवन से जुड़े हर फैसले स्वयं ले सकती है और परिवार और समाज में अच्छे से रह सकती है। समाज में उनके वास्तविक अधिकार को प्राप्त करने के लिये उन्हें सक्षम बनाना महिला सशक्तिकरण है।

महिला सशक्तिकरण के द्वारा ये संभव है कि एक मजबूत अर्थव्यवस्था के महिला-पुरुष समानता वाले वाले देश को पुरुषवादी प्रभाव वाले देश से बदला जा सकता है। महिला सशक्तिकरण की मदद से बिना अधिक प्रयास किये परिवार के हर सदस्य का विकास आसानी से हो सकता है। एक महिला परिवार में सभी चीजों के लिये बेहद जिम्मेदार मानी जाती है अत: वो सभी समस्याओं का समाधान अच्छी तरह से कर सकती है। महिलाओं के सशक्त होने से पूरा समाज अपने आप सशक्त हो जायेगा

अपने अधिकारों, समाज की रूढ़ियों और अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ना। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है शिक्षा के माध्यम से, पेशेवर स्तर पर महिलाओं को प्रोत्साहित करना, उनकी राय को स्वीकार करना, और उन्हें वह अधिकार प्रदान करना जो वे चाहें। महिलाओं को किसी ऐसे व्यक्ति के साये के पीछे नहीं रहना चाहिए जो खुद को अभिव्यक्त न कर सके

खिलखिलाएँ चाहें खुशियों भरी धूप में,
या डूबी हो आँसुओं की गहरी झील में
उड़ रही हो ऊँचे आसमान में
या उग रही हो पथरीली जमीं में
स्त्रियाँ...
हर हाल में जिंदा रहती हैं
पंख हों या ना हों
परिंदा रहती हैं!

✍पूनम राज
S.S.V.P.G.COLLEGE
HAPUR(UP)

नारी का सफर

दुनिया के इस बीहड में,
क्यों होता विचलित पल-पल?
संवेदना मन ही नहीं दिमाग में,
क्यों सोचे सबका ,हो चर- अचर?
मकान उसका भी उतना था |
पर घर क्या सिर्फ मेरा था ?
उम्र की पचासवी दहलीज पर,
आया याद क्यों भार है ऊपर ?
क्या दिल और दिमाग को अलग कर,

है संभव किसी नारी का सफर?
दादी, नानी बुआ, ताई, चाची,
सास, देवरानी, जेठानी, ननद आदि |
सब गुजरी इस सफर से,
फिर क्यों सास, देवरानी,जेठानी,ननद,
अनजान रहतीं हैं मेरे दर्द से |
डॉ ज्योति शर्मा

डॉ० ज्योति शर्मा
राजकीय उच्च विद्यालय
सेक्टर-36,चंडीगढ़

10 LINES ON WOMEN EMPOWERMENT

1) Women empowerment helps in improving the standard of life of women in rural as well as metro areas.
2) Women's empowerment helps in preventing the cruel crime of female foeticide.
3) It also helps in reducing domestic violence and crimes against women.
4) Women empowerment helps in reducing gender inequality in society.
5) The empowerment of women has also brought a lot of economic and social gains to India.
6) Women empowerment is important for solving societal issues like poverty, unemployment and birth control in India.
7) Women empowerment helps in securing the rights of women in India thereby maintaining their social status in society.
8) Women empowerment helps in achieving comprehensive growth meaning growth in each sector and for all the sections of society.
9) Empowered women can contribute to nation-building by joining any sector like an army, social service, politics, education, corporate sector, etc.
10) The government should focus, especially in rural areas, for empowering women as the majority of India's population resides in the village.

© TeachingBanyan.com

Dr. Seema

Assistant Prof.-Geography (Extn.)

G.C. Nalwa

स्वतंत्रता प्रत्येक व्यक्ति का बुनियादी अधिकार है। आधुनिक युग में इसे एक जीवन मूल्य के रूप में भी देखा जाता है। नारी की दास्तान बहुत पुरानी है। वह कैसे सामंती ताकतों के घेरे में पिस रही है,पितृसत्ता उसका उत्पीड़न करतेरहे हैं। पर्दा प्रथा, बंधुआ मजदूरी, बाल विवाह, सामंती जकड़ कुप्रथाएँ रही है/ समाज में जो गुलामी की जंजीरे हैं उन जंजीरों को तोड़ कर नारी आज समाज में अपनी अलग पहचान बनाकर आधुनिकता के आईने में प्रगति की ओर अग्रसरहो शिक्षित कुशल राजनीतिज्ञ और सामाजिक लैंगिक समानता को उद्घाटित करती है। महिलाओं को शैक्षणिक और पेशेवर समानता के अवसर प्रदान होने चाहिए। नारीवाद, लैंगिक समानता, भेदभाव, लैंगिक संतुलन को बनाए रखने के लिए है। नारी स्वतंत्र हो गई है अब वर्चस्ववादी संस्कृति संकट में नजर आ रही है ।नारी धीरे-धीरे सत्ता में आ रही है।इस आधुनिक युग में नारी गुलामी की जंजीरों को तोड़ कर स्वतंत्रता का ध्वज फहराएगी-

“भंयकर सामाजिक जंजीरों की जकड़ है,
इस अन्याय को गुब्बारे की सी सुई की दोहरी मांग है।“

Dr.Rajender Singh
Assistant Prof.-Hindi
S C College Abohar(Punjab)

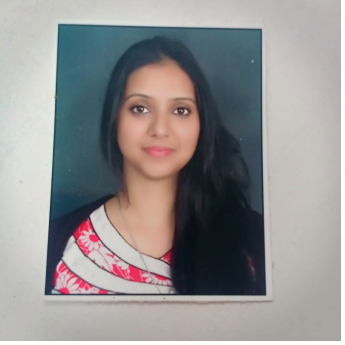

TRACING SIMILITUDE BETWEEN WOMAN AND NATURE IN ANCIENT INDIAN TEXTS

Dr Mrinalini Kashyap
Assistant Professor in the Department of English
Government Degree College, Kandaghat (distt. Solan)
mrinalini.kashyap6@gmail.com

There have been uncanny similarities between woman and nature as represented in literature from the ancient times. In the provocative critical theory Ecofeminism, most feminists try to explain the oppressive nature of the relationship between man, woman and nature. The connection between woman and nature has been explored widely in the religion, politics and literature. Woman and nature both have been dominated, exploited and oppressed by man.

In India, we can trace the relationship between woman and nature back to the ancient times. In the Vedic times, man and woman were considered equal. Women, like men, would wear janeyus and would perform sacrificial yagyas to please the mother earth. Vedic feminism tells us that women were in no way unequal to men in those days. The most graceful form of lord Shiva is that of Ardhnarishwar, half man and half woman. The female consort was called ardhangini, vamangi etc. However, while woman was metaphorically compared to mother earth or mother nature (prakriti) to complete the purusha (the consciousness), in reality she was exploited. In patrilineal society, the status of woman started degrading. In the writings of plays during the 4th and 5th century CE, the woman was represented as an intrinsic part of nature. The man would exploit the nature and the woman as well, all the time highlighting the role of women as goddesses. Literature was highly patriarchal and had put women in the conventional roles blinding the readers with misconceptions and prejudices.

Kalidasa in his play Abhijnanasakuntalam (the Recognition of Sakuntala), presents the female protagonist Shakuntala as weak, frail and emotional woman whose life revolves around the man she loves, the king Dushyanta and the man she gives birth to i.e Bharata. Bhasa, in his Svapnavasavadatta and Kalidasa in Malvikagnimitram presented the self sacrificing women. Women, in these plays are like caring and giving mother nature, whose life-purpose is fulfilled in being beautiful, attractive and fertile. Like the nature in its avenging form(draught, flood, earthquake etc.) is never contemplated of, similarly the woman is never represented as vengeful, harsh and standing for her rights, if she is the heroine. Shakuntala is, in many ways, the nature itself. She was reared by Sakuni, the birds, thus named Sakuntala. She wears tree barks, writes a love letter on lotus-leaf, feeds a fawn like its mother and is given jewellery by mother nature herself. Vasavadatta weaves flower garlands to trigger the emotional memory of the king Udayan. Malvika, the heroine of Kalidasa is sent to touch the Ashoka tree with her foot so that it blossoms. There is a courtesan named Vasantsena in Shudraka's play Mrichhakatikam whose name signifies the most beautiful of all seasons i.e Spring season. Like spring season is enjoyed by everyone, a courtesan has the duty (dharma) to please every male. The celebration of mango-festival in Mrichhakatikam, flower gardens and canopies in Malvikagnimitram and beauty of flora and fauna in Abhijnanasakuntalam—all are examples of finding beauty in nature and harnessing it to the fullest. The same joy is found in exploring the beauty of female in these ancient texts. The beauty of every body part of heroine points towards the objectification of nature as well as the commodification of woman. Thus woman and nature are inter-related and are represented as the epitome of sensitivity and empathy. Patriarchy wants nature to flourish but under his wings and there are similar expectations from the woman also. In the ancient patriarchal texts, no one talks about the power that natural forces can unleash. In the similar way, the powerful personalities of women have never been given any representation in history and literature.

Dr.Vidushi Sharma
National Vice President
National Child & Women Development Council (NCWDC) New Delhi

नारी : इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति ,कर्म शक्ति

सार --

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।

या देवी सर्वभूतेषु सृष्टि-रूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।

नारी अपने आप में शक्ति है। वह चाहे किसी भी प्रकार की हो जैसे सृजन शक्ति, सहन शक्ति ,इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति, वैराग्य शक्ति, श्रृंगार शक्ति, समर्पण शक्ति, श्रद्धा, भक्ति,त्याग शक्ति, आसक्ति, प्रेम, समर्पण और इन सब को यथार्थ रूप प्रदान करने के लिए सबसे बड़ी शक्ति, "कर्म शक्ति" । शिव और शक्ति की कथा के बारे में कौन नहीं जानता? हमारे भारतवर्ष में "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमंते तत्र देवता" इस उक्ति का पालन अनादि काल से ही होता चला आ रहा है । नारी का एक माँ का रूप सबसे सुंदर, आकर्षक, प्रेममय और अनुकरणीय होता है।मेरा ऐसा मानना है कि नारी केवल एक माँ बनकर ही पूर्णता को प्राप्त कर लेती है।नारी केवल मनुष्य रूप में ही पूजनीय नहीं है अपितु संपूर्ण नारी जाति चाहे वह धरती मां हो या किसी अन्य प्रजाति की भी, सदैव ही अग्रगण्य होती है क्योंकि वह जन्म और पालन पोषण में अपना सर्वस्व त्याग देती है। हमारा पूरा जीवन ही स्त्री जाति पर निर्भर करता है, एक माँ के विभिन्न स्वरूपों पर निर्भर करता है ,यदि हम यह कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। हमारी सृष्टि का प्रारंभ शक्ति से होता है, हमारे अस्तित्व से यानी जन्म से होता है। जन्म एक माँ ही दे सकती है(हालांकि बीज तत्व, पुरुषत्व की भूमिका को नकारा नही जा सकता) उसके बाद भरण पोषण का कार्य धरती मां पर निर्भर करता है, अन्नपूर्णा द्वारा किया जाता है, विद्या की देवी और अन्य सभी कलाओं की देवी भी स्त्री जाति यानी सरस्वती मां है, और पूरा जीवन लक्ष्मी मां की कृपा से चलता है तथा मृत्यु के बाद मां गंगा या पुन: धरती मां की गोद में ही हम समा जाते हैं।
यानी
"जीवन से पहले, जीवनपर्यंत और जीवन उपरांत"

तीनों ही स्थितियों में मां की भूमिका, नारी जाति की भूमिका अग्रगण्य है, वंदनीय है, अनुकरणीय है, अभिनंदनीय है ।
परंतु यह भी सत्य है कि बिना पुरुष के हर नारी अधूरी है। उसे जीवन के हर मोड़ पर पुरुष की आवश्यकता है ,उसके आलंबन की आवश्यकता है, इस शाश्वत सत्य को नकारा नहीं जा सकता।

परिचय---

नारी इस चराचर जगत की धुरी है या यूं कहा जाए कि यह जगत जिस पर आश्रित है वह आधार, वह आलंबन स्वयं धरती मां ही है जो नारी का ही एक स्वरूप है, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। हमारा अस्तित्व, हमारे जन्म से आरंभ होता है। जीवन होगा तो सब बातें होंगी। यदि अस्तित्व और जीवन ही नहीं होगा तो कुछ भी संभव नहीं है। तो हम आरंभ से ही आरंभ करते हैं ,यानी सृजन, निर्माण से यानि जन्म से ।जन्म के लिए मां यानी नारी का होना अपरिहार्य है । जैसे कि पहले भी कहा जा चुका है कि नारी का पूर्ण रूप एक मां का होता है और जन्म प्रक्रिया में हम बीज तत्व यानि "पुरुषत्व" को नकार नहीं सकते। यहाँ मैं स्वरचित कविता की दो पंक्तियां कहना चाहूंगी--

मां है तो कृष्ण है ,राम है, बलराम भी है, क्योंकि मां के बिना असंभव, इंसान तो क्या भगवान भी है।"

इस पृथ्वी पर अवतरित होने के लिए स्वयं सृष्टि के रचयिता विष्णु भगवान को भी माँ के गर्भ की आवश्यकता हुई क्योंकि जन्म प्रक्रिया बिना माँ के बिना असम्भव है। भगवान के बाद नारी वो शक्ति है जो

"मौत की गोद में जाकर जिंदगी को जन्म देती है"।

आज नारी हर क्षेत्र में कामयाब है। पौराणिक काल से लेकर आज तक हमारे पास इतने जीवंत उदाहरण हैं कि हम इस सत्य को नकार नहीं सकते

इच्छाशक्ति---

जब तक नारी अपने मन में किसी बात का संकल्प नहीं लेती तो उसे कोई भी अपने स्वार्थ हेतु झुका सकता है। परंतु एक बार जब उसने अपनी इच्छा शक्ति को जागृत कर लिया और कोई काम करने की ठान ली , कोई संकल्प ले लिया तो संसार की कोई भी ताकत उसे अपने फैसले से हटा नहीं सकती। इसी इच्छा शक्ति के बल पर सभी कार्यों की रूपरेखा तैयार की जाती है, जैसे कोई भी कार्य "मनसा, वाचा, कर्मणा" के आधार पर पूर्ण माना जाता है अर्थात किसी भी कार्य को करने के लिए पहले मन में विचार आता है, फिर उस कार्य को करने की 'इच्छा शक्ति' जागृत होती है। फिर वाणी से उसे संसार के सामने रखा जाता है और अंत में कार्यक्रम 'कर्मशक्ति' के द्वारा उसे यथार्थ का रूप प्रदान किया जाता है। इच्छा हमारी शक्ति का केंद्र बिंदु है। इसी को आधार मानकर बछेंद्री पाल, अनीता कुंडू, संतोष यादव आदि ने एवरेस्ट की चोटी को भी झुका दिया। उन्होंने दुनिया को यह दिखा दिया कि यदि नारी चाहे तो उसके हौसले पर्वतों से भी बुलंद और तटस्थ होते हैं । इन्हीं बुलंद इरादों को लेकर ये विश्व में अपना नाम रोशन करती आ रही हैं।

ज्ञान शक्ति---

ज्ञानशक्ति को इच्छा शक्ति का दूसरा पड़ाव माना जा सकता है क्योंकि जब तक कुछ सीखने की इच्छा मन में नहीं होगी तो किसी भी प्रकार का ज्ञान हासिल नही किया जा सकता। साहित्य और कला के क्षेत्र में भारतीय नारी ने ज्ञान और कला की शक्ति को सजीव प्रमाण प्रदान किया है जिनमें प्रमुख हैं लता मंगेशकर,आशा भोंसले, मधुबाला, वैजन्ती माला, अरुंधति राय, सरोजिनी नायडू, महादेवी वर्मा, गिरिजा देवी,परवीन सुल्ताना,नालिनी कामलिनी, आदि ऐसी कितनी ही बड़ी हस्तियां हैं जिन्होंने साहित्य और कला के क्षेत्र में विश्व में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। कोई भी कला तो बिन नारी के पूर्ण हो ही नही सकती ,यदि यूं कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि साहित्य में, कला में, चित्रों में, नृत्य में, गीत में, संगीत में, अभिनय में, भक्ति में, प्रेम में, त्याग में, समर्पण आदि ,इन सब में यदि "नारी" को हटा दिया जाए तो हमारे पास कुछ भी नहीं बचेगा। एक बार आप कल्पना करके देखें कि मीराबाई, अहिल्याबाई ,राधा, देवकी मां ,यशोदा मां, कौशल्या, सुमित्रा, केकई, सीता, उर्मिला इत्यादि इन नारी पात्रों को यदि अपने इतिहास से, अपने साहित्य से निकाल दिया जाए तो न हीं कृष्ण कथा का सौंदर्य बचेगा और ना ही राम काव्य का ही स्वरुप कायम रह पायेगा। यानि जिस प्रकार एक घर, एक परिवार नारी के बिना पूर्ण नहीं हो सकता, एक मां के बिना पूर्ण नहीं हो सकता क्योंकि नारी जब मां बनती है तभी वह पूर्ण होती है तथा परिवार का निर्माण भी तभी होता है, जब घर में संतान का जन्म होता है। इस के संदर्भ में पुन: स्वरचित कविता की दो पंक्तियां कहना चाहूंगी कि

"मां है तो परिवार है, संस्कार है,
क्योंकि माँ में ही तो ममता है, प्यार है दुलार है।"

इच्छा शक्ति, प्राण शक्ति है। इसी इच्छा शक्ति को अपना आलंबन बनाकर सावित्री अपने सतीत्व के बल पर अपने पति सत्यवान के प्राण यमराज से भी वापस ले आई थी। एक नारी के धर्म में, उसकी निष्ठा में ,उसके प्रेम में बहुत अधिक ताकत होती है। सती अनुसूया ने इसी बल को ढाल बनाकर सूर्य को भी उदय होने से रोक दिया था।

इच्छा शक्ति और ज्ञान शक्ति को जहां यथार्थ रूप प्राप्त होता है उसे कर्म शक्ति कहते हैं।इसी के आधार पर सभी कार्यों में सफलता प्राप्त की जा सकती है। कर्म शक्ति में तो नारी का कोई सानी ही नही है। वह अकेली ही माँ दुर्गा की भांति एक ही समय में दस काम कर सकती है।

नारी हर रूप में एक शक्ति है ।वह पुरुष को जन्म देती है, उसका पालन करती है (एक मां के रूप में) आजीवन उसका साथ देती है(एक पत्नी के रुपमें) जिम्मेदार बनाती है, सोचने का नजरिया बदलती है,(एक बेटी के रूप में) और जीवन को आलंबन देती है (पुत्र वधू के रूप में)।

यानि जीवन के हर पड़ाव में ,हर रिश्ते में वह सशक्त है।

जब हम समाज निर्माण की बात कर रहे हैं, भारतवर्ष की बात कर रहे हैं, स्त्रियों के शौर्य की बात कर रहे हैं तो भारतीय इतिहास में स्वतंत्रता आंदोलन में नारियों की भूमिका की बात को कैसे छोड़ा जा सकता है ।इस आंदोलन में रानी लक्ष्मीबाई ,सावित्रीबाई फुले, अरुणा आसफ अली, दुर्गाबाई, सुचेता कृपलानी ,विजयलक्ष्मी पंडित इन सबके नाम स्वर्ण अक्षरों से अंकित है। इन सब नारियों ने न केवल स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया अपितु समाज के उत्थान के लिए भी उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया। समाज हम सब लोगों से ही मिलकर बना है। और जिसमें हमें ऐसे कार्य चाहिए कि अधिक से अधिक जन कल्याण हो सके चाहे वह किसी भी क्षेत्र में हो शिक्षा के, स्वास्थ्य के, खेलों के, सांस्कृतिक आदि। यानी समाज को हर दृष्टि से सक्षम और सफल बनाना है तो उसमें उसके सभी क्षेत्रों में बराबर उन्नति करनी होगी ।लोगों को आम जनता को ऊपर उठाने की बात करनी होगी । यदि हम लोगों में मानवीय गुणों, सांस्कृतिक चेतना मातृभूमि के प्रति प्रेम, समर्पण आदि के भाव जागृत कर पाते हैं तो यह एक उत्कृष्ट कृत्य बन जाता है क्योंकि एक एक व्यक्ति से ही समाज का निर्माण होता है। यदि प्रत्येक व्यक्ति और भावी पीढ़ी यदि सही सोच वाली है, अच्छे विचारों वाली है, सकारात्मक अभिप्रेरणा से प्रेरित है तो वह समाज प्रगति के पथ पर सदैव अग्रसर बना रहता है, और इन सब में एक नारी की भूमिका सर्वोपरि है क्योंकि एक परिवार को बनाने में नारी का स्थान सर्वोच्च है और परिवार समाज की प्राथमिक इकाई है।

जब इतने महान कार्य नारी द्वारा किए जा सकते हैं तो नारी उत्थान की संकल्पना अनिवार्य तत्व बन जाती है और वर्तमान परिदृश्य में इनका मूल्यांकन इन आधारों पर किया जा सकता है कि इतने महान कार्य करने वाली नारी राष्ट्र निर्माण का कार्य बखूबी कर सकती है एवं राष्ट्र निर्माण में सक्रिय सार्थक भूमिका अवश्यंभावी रूप से निभा सकती है और निभाती ही चली आ रही है। यहां हम कमला नेहरु, श्रीमती इंदिरा गांधी, शीला दीक्षित, सुषमा स्वराज , स्मृति इरानी , मीरा कुमार , वसुंधरा राजे ,सुमित्रा महाजन, निर्मला सीतारमण आदि इन सबका नाम ले सकते हैं। यहाँ हमने केवल भारतीय नारी की बात की है इसके अतिरिक्त पूरे विश्व में तो ऐसे अनगिनत उदाहरण मौजूद हैं। ये सब कर्म शक्ति का उदाहरण कहे जा सकते हैं।

निष्कर्ष---

निष्कर्षत: यही कहा जा सकता है कि इच्छा शक्ति, ज्ञान शक्ति, कर्म शक्ति के द्वारा समाज निर्माण में नारी की भूमिका सर्वोपरि है । वह निर्माण, पालन और मुक्ति तीनों की हेतु भूता सनातनी देवी के समान है ।एक तरह से वह 'त्रिदेव' यानि ब्रह्मा विष्णु और महेश तीनों का कार्य अकेले ही करती है क्योंकि जिस प्रकार ब्रह्माजी सृष्टि के 'रचयिता' माने गए हैं (नारी सृजनकर्ता है) विष्णु जी पालनहार (नारी और धरती माँ ही हम सबका भरण,पोषण करती है) और शिवजी विनाशक या संहारक ।[(यहां हम विनाश के स्थान पर मुक्ति का प्रयोग कर रहे हैं माँ गंगा मुक्ती प्रदान करती है) क्योंकि मां कभी भी विनाशक नहीं हो सकती। एक पुत्र कुपुत्र हो सकता है परंतु एक माता कभी कुमाता नहीं हो सकती।]

"कुपुत्रो जायते क्वचिदपि कुमाता न भवति|"
(श्री दुर्गा सप्तशती)

इस प्रकार जीवन का कोई भी क्षेत्र हो वहां नारी जाति ने अपना लोहा मनवाया ही है। वर्तमान युग में भी ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहां स्त्रियों की सक्रिय, सार्थक भागीदारी ना हो और वह सफल ना हुई हो। इतिहास में भी किसी भी क्षेत्र में नारी की सफलता पर प्रश्नचिन्ह नहीं लगाया जा सकता। और वास्तव में ही 'नारी नारायणी' है ।उसका पूरा जीवन चुनोतियों से भरा होने के बावजूद वो तटस्थ खड़ी है एक और आने वाली चुनोती का सामना करने के लिए।फिर भी मुस्कुरा कर अपना जीवन व्यतीत करती है तथा सबके लिए अपने अरमानों का हमेशा से ही बलिदान करती आयी है। इस पृथ्वी पर ऐसा कोई जीव नही जिसका संघर्ष जीवन से पहले यानि जन्म लेने से पहले ही आरंभ हो जाता हो या यूं कहें कि जन्म के लिए संघर्ष शुरू हो जाता हो एक माँ के लिए भी और एक बेटी के लिए भी (दोनो ही नारी जाति)।

इससे अधिक और क्या कहना है कि सब जानते हुए भी नारी ने अपना वर्चस्व कायम रखा है तथा विश्व में तो क्या अंतरिक्ष में भी अपना नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित कर इतिहास बनाया है और आगे भविष्य में भी ऐसी ही उम्मीद की जा सकती है क्योंकि.....

" माना कि पुरुष बलशाली है, पर जीतती हमेशा नारी है,
सांवरिया के छप्पन भोग पर सिर्फ एक तुलसी भारी है"।

लेखिका
डॉ विदुषी शर्मा (वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
अकादेमिक काउंसलर, IGNOU
OSD , (Officer on Special Duty)NIOS
(National Institute of Open Schooling)
ईमेल- drvidushisharma@gamil.com
M 9811702001

जसविंदर शर्मा

भारतीय लेखा व लेखा परीक्षा विभाग में कल्याण अधिकारी

205,जी. एच**-3**

सेक्टर**-24,**पंचकूला**-134116(**हरियाणा**)**

आधी आबादी का सच **0** लेख **0** जसविंदर शर्मा

अपने काम के स्थान पर औरतों के शोषण को लेकर तथाकथित सभ्रांत लोगों की तरफ उंगली उठ रही है। स्त्री पर होने वाला यह शोषण और हिंसा सिर्फ घर, बाजार या रास्ते तक ही सीमित नहीं है। किताबों की दुनिया, फिल्मों, विज्ञापन तथा मीडिया में स्त्री के साथ र्दुव्यवहार किया जाता है। यही कारण है कि हर साल **25** नवम्बर को उन पुस्तकों को 'इंटरनेशनल पुरस्कार' दिया जाता है जिन पुस्तकों में औरतों के खिलाफ हिंसा खत्म करने का प्रयास किया जाता है।

अरस्तू ने औरत की परिभाषा यह दी थी कि औरत कुछ गुणवत्ताओं की कमी के कारण औरत बनती है। दलील यह दी गई कि प्राकृतिक रूप से औरत में कुछ कमियां हैं। अरस्तु औरत को स्वायत व्यक्ति नहीं मानता था। यहां तक कि औरत अपने बारे में नहीं सोच सकती और वही बन जाती है जैसा पुरुष उसे आदेश देता है। बहुत सारी औरतें अपनी इसी नगण्यता मे संतुष्ट रहती हैं।

आज साबित हो चुका है कि ऐसी कोई विलक्षणता नहीं जो पुरूष में हो और नारी में न हो। औरत की अधीनस्थ बने रहने की स्थिति पर अब काफी चिंतन मनन हो रहा है। खासकर हमारे देश में औरत अगर पढ़ी लिखी है और काम करती है तो उससे समाज और परिवार की अपेक्षाएं बहुत बढ़ जाती हैं।

लोग चाहते हैं कि वह सारी भूमिकाओं को बिना किसी शिकायत के निभाए। वह कमाकर लाए, घर में खाना भी बनाए, बर्तन धोए, बूढ़े सास ससुर की सेवा करे और बच्चे जने और उनकी देखभाल भी अच्छे से करे।

आदमी का क्या है उसे कई तरह की रियायतें मिली हुई हैं। इस्मत चुगतई की कहानी 'सोने का अंडा' में दिखाया गया है कि औरतों से सोने का अंडा देने की उम्मीदें बांधी जाती है यानि हर बार वह बेटा ही जने।

स्त्री अपनी इन्ही भिन्न-भिन्न भूमिकाओं में कब एक दोयम दर्जे का किरदार बन जाती है उसे खुद भी पता ही नहीं चलता। इसी सीलिंग के चलते स्त्री के आगे बढ़ने की संभावनाएं सीमित हो जाती हैं।

विश्व की प्रत्येक संस्कृति में औरत को या तो देवी के रूप में रखा गया या गुलाम की स्थिति में। अपने किसी महत्वपूर्ण फैसलों में आदमियों ने उससे कभी सलाह लेना जरूरी नहीं समझा। उसे घर की चारदीवारी में रखा गया।

अब तक कई संस्कृतियों में उसे पर्दे में बाहर निकलना पड़ता है, उसे वोट देने का अधिकार नहीं, वह गाड़ी नहीं चला सकती, किसी अविभावक के साथ के बिना बाजार या सफर पर नहीं जा सकती। बोको हराम, अल-कायदा, आई एस आई एस, तालिबान आदि नाम काफी हैं आज की दबी कुचली त्रस्त सताई हुई औरत की कहानी कहने के लिए और औरत की आजादी पर लगाम लगाने की लिए।

स्त्री आज अपनी नियति खुद लिखने लगी है। आज तक आदमी ने औरत के बारे जो कुछ लिखा उस पर शक किया जाना चाहिए क्योंकि आदमी ने सब कुछ अपने स्वार्थ की दृष्टि से सोचा और लिखा, अपने हक में कानून बनाए और अपने फायदे के लिए घर के कायदे निर्धारित किए।

अगर 'देवदास' में पारो को शरतचन्द्र की बजाय किसी स्त्री ने लिखा होता तो क्या पारो इस तरह घुट-घुटकर मरती। टॉलस्टाय के प्रसिद्ध उपन्यास 'अन्ना कारेनिना' को अगर स्त्री ने लिखा होता तो क्या वह अन्ना को रेल के नीचे कटकर मरने देती।

जसविंदर शर्मा

205, जी एच -*3*, सेक्टर-*24*, पंचकूला-*134116* हरियाणा मो. *98724 30707* ईमेल- *NEWJAS205@GMAIL.COM*